शोध - प्रारूप

नागपुरी साहित्यकार उमेश नन्द तिवारी का रचना संसार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीएच. डी. हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय,

राँची विश्वविद्यालय, राँची

वर्ष - 2024

शोध निर्देशक

(डॉ. अजीत मुण्डा)
सहायक प्राध्यापक
मुण्डारी विभाग
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय,
राम लखन सिंह यादव महाविद्यालय, राँची।

शोधकर्ता

(अनुजा कैथर)
एम. ए. नागपुरी
यू. जी. सी. नेट उतीर्ण
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी
विश्वविद्यालय, राँची।

प्रस्तावना :-

झारखण्ड प्रदेश की संस्कृति और प्रकृति बड़ी अनुठी है। इसके गोद में असंख्य दुर्लभ चीजों का समागम है। इस धरा के कोख में अनेकानेक बहुमूल्य खनिज सम्पदाओं का विपुल भण्डार तो है ही, इसकी सभ्यता और संस्कृति भी अप्रतिम है, अद्भूत है। जो इस विश्व पटल पर अलग पहचान देती है। यहाँ की संस्कृति में समाहित लोककलाएँ बेहद खास है। कोई भी पर्व-त्योहार या अनुष्ठान हो गीत-संगीत एवं नृत्य के बिना अधूरे हैं।

झारखण्ड चारों ओर से पहाड़ों और जंगलों से घिरा हुआ प्रकृति की गोद में बसा हुआ एक राज्य है। झारखण्ड का तात्पर्य है- 'जंगलों का भूखंड'। यह क्षेत्र प्राकृतिक उपादनों से जितना भरा-पूरा है उतना ही अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा-साहित्य के लिए विख्यात है। झारखण्ड भारत का एक प्रमुख राज्य है। झारखण्ड राज्य में बहुत बड़ी संख्या में घने वन और झाड़-झंकार जैसी अधिकांश वनस्पतियाँ पाई जाती है। यह राज्य छोटानागपुर पठार पर बसा हुआ है। झारखण्ड का शाब्दिक अर्थ है- 'वन का क्षेत्र'। यह प्रदेश सघन वनों, नदी-नालों, झरनों एवं पर्वतों और पहाड़ों से आच्छादित होने के साथ-साथ अनेक खनिज सम्पदाओं से भरा पड़ा है। सम्पूर्ण झारखण्ड प्रदेश के जनजातियों की अपनी भाषा है। लोकगीत एवं नृत्य इनके जीवन के अभिन्न अंग है। इनकी भाषा, लोकगीत एवं नृत्य व्यापक एवं समृद्ध है। इसके सम्बन्ध में एक उक्ति प्रचलित है- बोलना ही गीत है और चलना ही नृत्य है। कला संस्कृति जीवन के आधार हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि किसी भी प्रदेश की पहचान का आधार वहाँ की संस्कृति ही होती है। वहाँ की बोली जाने वाली भाषाएँ, लोक संगीत व लोक-नृत्य भी। अपनी अनुपम लोक संस्कृति की वजह से ही झारखण्ड की यह विचित्र भूमि लोगों के आकर्षण का केन्द्र रही है। इस बहुप्रजातिक, बहुभाषिक व बहुसांस्कृतिक प्रदेश में नागपुरी जनसम्पर्क की एक प्रमुख भाषा है, जिसका एक सुदीर्घ साहित्यिक इतिहास रहा है। इस प्रदेश की मन मोहती प्रकृति व लुभाती संस्कृति की गोद में पले नागपुरी गीतों के सौंदर्य से वशीभूत होकर प्रो0 केशरी कुमार ने "नागपुरी को गीतों की रानी" कहा है। मागधी अपभ्रंश से प्रसूत बिहारी परिवार की अन्य भाषाओं की तरह नागपुरी भी इससे विकसित एक आर्य भाषा है। झारखण्ड राज्य गठन के पश्चात् नागपुरी झारखण्ड की सर्वप्रमुख आर्यभाषा बन गई और एक स्वतंत्र भाषा के रूप इस प्रदेश में नई चेतना प्रस्फुटित कर रही है। अतीत में नागपुरी नागवंशी राज्य काल में राजभाषा के रूप में पर्याप्त समृद्धि पा चुकी है। इस रूप में सम्मानित होने से इसका चतुर्दिक विकास हुआ। समय के झोंकों को सहते हुए इसके अपने साहित्य भण्डार हैं तो शिष्ट साहित्य में एक से बढ़कर एक रचनाकार सामने आये हैं। नागपुरी शिष्ट साहित्य का प्रारम्भ 1600 ई0 के आस-पास माना जाता है। रघुनाथ नृपति इस काल खण्ड के निश्चित नाम हैं। वे नागवंश के पचासवें शासक एवं कवि थे। नागपुरी पद्य साहित्य का विकास भी अन्य साहित्यों की भाँति हुआ। इसके कवि गीतकार की संख्या हजारों में है। प्रमुख कवियों में मुख्य रूप से हनुमान सिंह, बरजू राम, बंधु लोहार, महंत घासी, कंचन, सोबरन, रूंगटू मलार, घासी राम जैसे दिग्गज कवि हुए जिन्होंने नागपुरी पद्य

साहित्य को सजाया, संवारा एवं इसकी गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखा। आगे चलकर दृग्पाल राम देवघरिया, अनुप राय, धनी राम बक्शी जैसे प्रतिभाशाली कवियों ने नागपुरी साहित्य को निखारा।

नागपुरी का आधुनिक साहित्य समृद्ध एवं उज्जवल है। सन् 1960 ई0 के आस-पास शिष्ट साहित्य में जो गति आयी, वह मुक्तिदायी प्रवाह है। इस काल को शिष्ट साहित्य का नवजागरण काल कहा जाता है। जिसमें नयी भावभूमि, नया परिवेश, नया वातावरण में उन्मुक्त साँस लेती हुई यह भाषा अनेक प्रतिभाओं को साहित्य सृजन में प्रेरित करती हैं। फलतः पद्य की अविरल धारा के साथ-साथ गद्य का प्रवाह भी नयी क्रांति के साथ प्रारम्भ होता है। मानव अनुभूतियों तथा संवेदनाओं का उद्घाटन पद्य के साथ-साथ गद्य में भी होने लगता है। साहित्यकारों की कलम गद्य की विभिन्न विधाओं कहानी, निबंध, नाटक, लेख, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा-वृतांत, व्यंग्य आदि में अपने भाव का प्रकाशन करता है। इस काल खण्ड के प्रमुख नाम है दादा प्रफुल्ल कुमार राय जिन्होंने नागपुरी संस्कृति को समग्र रूप से प्रस्तुत किया। इसके अलावे मृत्युंजय नाथ शर्मा, शारदा प्रसाद शर्मा, सहनी उपेन्द्र पाल 'नहन', लाल रणविजय नाथ शाहदेव, डॉ. बी. पी. केशरी, डॉ. भुवनेश्वर अनुज, पद्मश्री मधु मंसुरी 'हंसमुख', छितीज राय, पद्मश्री मुकुन्द नायक, डॉ. कुमारी वासन्ती, डॉ. गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज, गोबिन्द शरण लोहरा, प्रमोद राय, डॉ. शकुन्तला मिश्र, मनुपूरण नायक आदि।

ऐसे ही नागपुरी साहित्य जगत के साहित्यकार की अग्रणी पंक्ति में एक सुविख्यात नाम है- डॉ. उमेश नन्द तिवारी। नागपुरी साहित्य जगत में विशिष्ट स्थान रखने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी उमेश नन्द तिवारी जी का जन्म 18 अगस्त 1962 को राँची जिला के माण्डर प्रखण्ड के कंदेरी ग्राम में वृंदवासिनी देवी एवं आनन्द किशोर नन्द तिवारी के घर हुआ। जो आगे चलकर नागपुरी के मूर्धन्य साहित्यकार हुए। इस साहित्यकार में गद्य सृजन तो है ही पद्य सृजन भी उतना ही उम्दा है। किसी व्यक्ति विशेष में इन गुणों का संगम विरले ही देखने को मिलता है। नागपुरी साहित्य का एक समृद्ध विरासत रहा है जिसमें विविध विधाओं का समावेश है। नागपुरी साहित्यकार डॉ. उमेश नन्द तिवारी को नागपुरी भाषा के प्रति लगाव अटूट है। वे अपनी मातृभाषा नागपुरी को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

शोध विषय की प्रेरणा :-

झारखण्ड राज्य मेरी जन्मभूमि एवं कर्मभूमि है और बाल्यावस्था से ही नागपुरी भाषा के प्रति लगाव रहा है। मातृभाषा नागपुरी होने के कारण मैंने स्नातकोत्तर नागपुरी भाषा से की। इस दौरान मुझे नागपुरी भाषा को और अधिक नजदीक से जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ। स्नातकोत्तर के कालावधि में मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि क्यों न अपनी मातृभाषा के लिए मैं अपना कुछ योगदान दूँ। क्योंकि अध्ययन काल के दौरान मुझे इस भाषा के सहायक पाठ्य-सामाग्रियों का अभाव महसूस हुआ।

नागपुरी भाषा साहित्य में सहायक पाठ्य-सामाग्रियों में अभाव के दौर में मैंने एक ऐसे रचनाकार की रचनाएँ मिली। जो मुझे इस भाषा-साहित्य के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा उत्पन्न किया, वो रचनाकार है- डॉ. उमेश नन्द तिवारी। इनकी रचनाओं से इतना प्रभावित हुई कि मुझे लगा की जब भी कभी मौका मिले तो, मैं इनके जीवन एवं साहित्य पर शोध कार्य करूँगी। इस विषय पर मैं अपने गुरूजी से चर्चा की तो उन्होंने मुझे ''नागपुरी साहित्यकार उमेश नन्द तिवारी का रचना संसार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' विषय पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया, जिससे मुझमें एक नया उत्साह उत्पन्न हुआ। मेरे अन्य गुरूजनों ने भी इस शोध कार्य के लिए मुझे प्रेरित किया।

परिकल्पना :-

परिकल्पना शब्द 'परि' + 'कल्पना' दो शब्दों से मिलकर बना है। परि का अर्थ है - 'चारों ओर' तथा कल्पना का अर्थ 'चिंतन' है। इस प्रकार परिकल्पना से तात्पर्य किसी समस्या से सम्बन्धित समस्त सम्भावित समाधान पर विचार करना है। नागपुरी भाषा साहित्य के अध्ययन से मैं पायी कि नागपुरी साहित्य के मुर्धन्य साहित्यकार डॉ. उमेश नन्द तिवारी जी के रचना संसार नागपुरी साहित्य को चमत्कृत करने की क्षमता रखते हैं। अतः इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व उद्घाटित कर लोगों के सम्मुख लाने की दरकार है ताकि साहित्य प्रेमी, सुधी जन इससे परिचित हो सकें। चूँकि यह अपने आप में एक अलग विषय है तथा इस गंभीर विषय पर कार्य की अपार संभावनाएँ हैं।

शोध विषय की औचित्य :-

किसी भी शोध कार्य का महत्व तब तक नहीं होता जब तक की उसकी उपयोगिता समाज, प्रदेश एवं देश के लिए न हो।

शोध का उद्देश्य :-

1. नागपुरी साहित्य का गहन अध्ययन करना।
2. नागपुरी साहित्य की महत्व एवं उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना। साथ ही इनके संकलन, संचयन एवं मूल्यांकन की दिशाएँ प्रशस्त करना।
3. नागपुरी साहित्य जगत के मूर्द्धन्य साहित्यकार डॉ. उमेश नन्द तिवारी जी के जीवन एवं साहित्य के माध्यम से झारखण्डी जनजीवन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डालना।
4. नागपुरी भाषा साहित्य को सुदृढ़ करना।
5. झारखण्ड के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास में योगदान देना।

शोध का महत्व :-

‘नागपुरी साहित्यकार उमेश नन्द तिवारी का रचना संसार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ’ शोध से समाज में निम्नलिखित प्रभाव पड़ेगा -

1. इस शोध प्रबंध के प्रकाशन में आने से समस्त नागपुरी भाषा-भाषियों एवं समाज में साहित्यकारों के प्रति सम्मान बढ़ेगा और जागृति की लहर आयेगी।
2. इसके समकालीन नागपुरी भाषा-भाषियों को साहित्य समीक्षा पर शोध के लिए आर्दश साबित होगा।
3. निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा एवं एक नयी जागृति उत्पन्न होगी।
4. अन्य झारखण्डी भाषाओं में शोध हेतु प्रेरणादायक साबित होगा।
5. साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र के लिए लाभकारी होगा।
6. इस शोध कार्य के प्रति भावी पीढ़ी का मनोबल बढ़ेगा।

शोध प्रविधि :-

प्रस्तावित शोध प्रबंध के अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध विधियों का अनुशरण किया जाएगा-

1. अवलोकन विधि
2. साक्षात्कार विधि
3. अनुसूची विधि
4. विश्लेषण विधि
5. प्रश्नावली विधि ।

शोध सहायक उपकरण :-

शोध से सम्बन्धित निम्नलिखित उपकरणों की आवश्यकता हो सकती है-

1. मोबाईल
2. इंटरनेट
3. लैपटॉप
4. रिकार्डर
5. अन्य ।

पीएच. डी. शोध-प्रबंध की प्रस्तावित रूप-रेखा

शोध विषय:- ''नागपुरी साहित्यकार उमेश नन्द तिवारी का रचना संसार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन''

प्रस्तावना

शोध विषय की प्रेरणा

परिकल्पना

औचित्य

शोध की विषय सीमा

शोध विधि

शोध सहायक उपकरण

विषय से सम्बन्धित पूर्व में किए गए शोध कार्यों का विवरण

प्रथम अध्याय :- नागपुरी साहित्यकार उमेश नन्द तिवारी का जीवन-वृत्त

(क) जन्म एवं परिवार

(ख) बाल्यावस्था

(ग) शिक्षा

(घ) किशोरावस्था

(ङ) यौवनावस्था

(च) विवाह

(छ) जीविकोपार्जन

(छ) प्रौढ़ावस्था ।

द्‌वितीय अध्याय :- नागपुरी साहित्यकार उमेश नन्द तिवारी की वैयक्तिक विशेषताएँ

(1) बाह्य विशेषताएँ

(क) धीर-गम्भीर

(ख) आतिथ्य करने वाले

(ग) कपड़ों के शौकिन

(घ) संग्रह वृति

(ङ) कुशल कृषक

(2) आन्तरिक विशेषताएँ

(क) स्वाभिमान व निर्भयता

(ख) न्यायप्रियता व कर्तव्य परायणता

(ग) अध्ययनशील विद्वान

(घ) दृढ़ निश्चयी

(ङ) धार्मिक आचरण

(च) उदार हृदय

(छ) गृहस्थ की विवशता

(ज) संगीतज्ञ एवं संगीत प्रेम

(झ) प्रकृति प्रेमी

(ञ) संतों की मस्ती एवं फक्कड़ता ।

तृतीय अध्याय :- नागपुरी साहित्यकार उमेश नन्द तिवारी की समकालीन परिस्थितियाँ

(क) प्राकृतिक परिस्थितियाँ

(ख) सामाजिक परिस्थितियाँ

(ग) राजनीतिक परिस्थितियाँ

(घ) आर्थिक परिस्थितियाँ

(ङ) धार्मिक-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

(च) साहित्यिक परिस्थितियाँ ।

चतुर्थ अध्याय :- नागपुरी साहित्यकार उमेश नन्द तिवारी का साहित्य सृजन

(क) नागपुरी शब्दकोश निर्माण

(ख) नागपुरी व्याकरण निर्माण

(ग) नागपुरी पद्य साहित्य

(घ) नागपुरी गद्य साहित्य

अ. कहानी

ब. निबंध

स. समीक्षा

द. अन्य ।

(ङ) तिवारी जी की हिन्दी साहित्य ।

पंचम अध्याय :- नागपुरी साहित्यकार उमेश नन्द तिवारी की रचनाओं में काव्य-सौंदर्य

1. भाव पक्ष :- (क) भाव

(ख) रस

(ग) गुण

2. कला पक्ष :- (क) अलंकार

(ख) छन्द

(ग) बिम्ब एवं प्रतीक

(घ) भाषा एवं शैली ।

षष्ठ अध्याय :- नागपुरी साहित्यकार उमेश नन्द तिवारी के संकलन एवं सम्पादन

1. नागपुरी शिष्ट साहित्य : संकलन व सम्पादन

(क) गीत-कविता संकलन

(ख) कहानी संकलन

(ग) निबंध संकलन

2. अन्य पुस्तकों के सम्पादक

3. हिन्दी व नागपुरी पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक

4. नागपुरी संस्था के माध्यम से नागपुरी भाषा साहित्य को संरक्षित-संवर्धित करना ।

सप्तम अध्याय :- नागपुरी साहित्य के विकास में उमेश नन्द तिवारी का योगदान एवं स्थान

निष्कर्ष :-

परिशिष्ट :-

(क) आधार ग्रंथों की सूची

(ख) संदर्भ ग्रंथों की सूची

(ग) साक्षात्कार की सूची

(घ) चित्रावली

(ङ) पत्र-पत्रिकाओं की सूची

नोट :- शोध प्रारूप में आवश्यकता होने पर आंषिक परिर्वतन किये जा सकते हैं ।

शोध निर्देशक

(डॉ. अजीत मुण्डा)

सहायक प्राध्यापक

मुण्डारी विभाग

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय,

राम लखन सिंह यादव महाविद्‌यालय, राँची ।

शोधकर्ता

(अनुजा कैथर)

एम. ए. नागपुरी

यू. जी. सी. नेट उत्तीर्ण

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्‌यालय, राँची ।

आधार ग्रंथों की सूची :-

क्र. सं.	लेखक एवं संपादक	पुस्तक	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	'कुमार' डॉ. राम	श्री गोबिन्द शरण लोहरा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा, राँची	2021
2	'केशरी', डॉ. सविता	नागपुरी कवि कंचन : जीवन एवं साहित्य	नागपुरी संस्थान पिठोरिया, राँची	2015
3	'तिवारी', डॉ. उमेश नन्द	आधुनिक नागपुरी, साहित्य संदर्भ - प्रफुल्ल कुमार राय : एक मूल्यांकन	झारखण्ड झरोखा, राँची	2005
4	'मिश्रा', डॉ. अनुपमा	सहनी उपेन्द्र पाल नहन : जीवन एवं साहित्य	झारखण्ड झरोखा, राँची	2008
5	'साहु', डॉ. मनोहर	विसेश्वर प्रसाद प्रसाद केशरी : दृष्टि एवं सृष्टि	झारखण्ड झरोखा, राँची	2022
6	'साहु', डॉ. सुखदेव	डॉ. भुवनेश्वर अनुज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा, राँची	2022

संदर्भ ग्रंथों की सूची :-

क्र. सं.	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	‘केशरी’, विसेश्वर	साहित्य के तत्व प्रसाद और आयाम	नागपुरी संस्थान, राँची	1971
2	‘गुप्त’, गणपतिचन्द्र	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत	लोकभारती प्रकाशन	2016
3	‘तिवारी’, डॉ. उमेश नंद एवं डॉ. राम कुमार	काव्य के विविध आयाम	झारखण्ड झरोखा, राँची	2024
4	‘तिवारी’, डॉ. रामचन्द्र	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना	संजय बुक सेंटर, वाराणसी	2000
5	‘दास’, डॉ. श्याम सुंदर	साहित्य लोचन	सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन	2018
6	‘दास’, रविन्द्र के.	काव्यशास्त्र और साहित्य समालोचना	चैखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी	2019
7	‘नवल’, नंद किशोर	कवि अज्ञेय,	राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली	2016
8	‘नगेन्द्र’, डॉ.	भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास	हिन्दी माध्यम कार्यान्वय, निदेशालय दिल्ली वि.वि.	2013
9	‘नगेन्द्र’, डॉ.	भारतीय काव्य सिद्धांत	हिन्दी माध्यम कार्यान्वय,	1990

			निदेशालय दिल्ली वि.वि.	
10	'बासंती', डॉ. कुमारी	नागपुरी गीतों की छंद रचना	किशोर विद्या निकेतन, बी 2/236-ए, भदौनी, वाराणसी	1993
11	'बाली', डॉ. तारकनाथ	भारतीय काव्यशास्त्र	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	2017
12	'मिश्र', डॉ. भागीरथ	काव्यशास्त्र	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	2010
13	'मिश्र', डॉ. सभापति	भारतीय काव्यशास्त्र, एवं पाश्चात्य साहित्य चिंतन	जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद	2015
14	'राय', गुलाब	काव्य के रुप	आत्माराम एण्ड संस, 1376 कश्मीरी गेट दिल्ली	2018
15	'शर्मा', देवेन्द्र नाथ	काव्य के तत्व	लोकभारती प्रकाशन, गोलधर वाराणसी	2015

पत्र-पत्रिकाओं की सूची :-

1. पझरा - साहदेव नगर, रातू रोड, राँची ।

2. सहिया - एम.जी. टावर 23 पूर्वी जेल रोड, राँची ।

3. डहर - छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ ।

4. संगोम - आई. टी. पब्लिकेशन कोकर, राँची ।

5. शंखनाद - प्र. नागपुरिया सांस्कृतिक संघ, सिमडेगा ।

6. राँची एक्सप्रेस - अपर बाजार, राँची ।

7. आज - सामलौंग, राँची ।

8. प्रभात खबर - कोकर, राँची ।

9. हिन्दूस्तान - कोकर, राँची ।

10. दैनिक जागरण - कोकर, राँची ।

11. दैनिक भास्कर - रातू रोड, राँची ।

12. सन्मार्ग - हरमू रोड, राँची ।

13. आदिवासी - बिहार सरकार, राँची ।

14. नागपुरी - वी/205 जगन्नाथपुर, राँची ।